



किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की एक पहल

तुषार आठरे*, राजेश टी.*, एस.के. रॉय* और अनिता देशमुख*

॥ भारत में कृषि मानसून पर निर्भर करती है। ग्रामीण युवाओं द्वारा इसे बहुत लाभदायक व्यवसाय नहीं माना जाता है। युवाओं को खेती में बनाये रखना एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है। इसी चिंता के दूर करने के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद के सहयोग से भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पुणे (अटारी-जोन 8) द्वारा पिछले पांच वर्षों में कुल 241 कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा 4936 किसानों और ग्रामीण युवाओं को आजीविका के लिए प्रशिक्षण दिया गया जिससे राज्य में कौशल प्रशिक्षण के जरिए स्वरोजगार को बढ़ावा मिल सके। कृषि क्षेत्र की परिणामी उत्पादकता बहुत कम है। भारतीय अर्थव्यवस्था के 8 से 9 प्रतिशत विकास दर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें कृषि क्षेत्र में विकास दर 4 प्रतिशत सुनिश्चित करनी होगी, और कृषि में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि को लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपनाना होगा। हालांकि, कृषि विज्ञान केंद्र, ग्रामीण युवाओं के कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्हें अधिक प्रभावी और मजबूत करने की आवश्यकता है। यह न केवल देश के ग्रामीण युवाओं को अपनी आजीविका बेहतर बनाने में सक्षम बनाएगा बल्कि कौशल विकास जैसे महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों की सफलता को भी सुनिश्चित करेगा। ॥

भारत, दुनिया का सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। यहां 1.4 बिलियन की आबादी के सापेक्ष में 68.84 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है (जनगणना 2011, भारत सरकार) जो कुल आबादी का दो-तिहाई से अधिक है। एक अनुमान के अनुसार 15.61 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से लगभग 57.8 प्रतिशत, यानी 9.02 करोड़ लोग कृषि से जुड़े हैं। (एनएसएसओ, वर्ष 2012-13)

*भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पुणे

वर्तमान समय की मांग है कि खेती को लाभदायक उद्यम बनाया जाए और उन लोगों को जोड़कर रखा जा सके, जो खेती छोड़ना चाहते हैं। कृषि उत्पादकता को भी बढ़ाया जाए, ताकि कृषि कार्यबल में छिपी बेरोजगारी के मुद्दे को हल करके किसानों की आय भी बढ़ाई जाए। इस समस्या का संभावित समाधान कृषि क्षेत्र में कौशल विकास के उपयोग से संभव हो सकता है।

इसको देखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'स्किल इंडिया मिशन' के तहत 15 जुलाई, 2015 को विश्व युवा कौशल दिवस मनाने का निर्णय लिया था। इसके तहत भारत को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया गया। मिशन का पहला उद्देश्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीयों के बीच औद्योगिक और उद्यमशीलता कौशल विकसित करना उद्योग की मांगों और आजीविका को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक है। कौशल विकसित करने और बड़े पैमाने पर उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए यह भारत की पहली एकीकृत राष्ट्रीय योजना है। बेरोजगार युवाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें रोजगारपरक बनाया जा रहा है। यह योजना कौशल विकास कर समग्र प्रभावशीलता में सुधार करने और किसी व्यक्ति को अधिक कुशलता से काम करने के लिए सशक्त बनाने के रूप में कार्य कर रही है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय कृषि कौशल परिषद (एएससीआई) के माध्यम से कुल 241 कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष 2017-18 से वर्ष 2022-23 के दौरान संपन्न हुआ। कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षकों ने विभिन्न प्रकार के कौशल विकास दक्षता हासिल करने और प्रमाणित होने के लिए 25-27 सितंबर, 2018 के दौरान पीजेटीएसएयू, हैदराबाद और 17-19 दिसंबर 2018 को भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग

कौशल विकास के प्रशिक्षण क्षेत्र

भारतीय कृषि कौशल परिषद के सहयोग से, भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान पुणे (अटारी-जोन 8) ने वर्ष 2017-18 के दौरान कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित करके उद्यमिता विकास कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। इसके लिए कुल 29 विषयों में प्रशिक्षण का प्रावधान है। इसमें मशरूम उत्पादन, बीज उत्पादन, मधुमक्खी पालन, गार्डनिंग (बागवानी), जैविक उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) उत्पादन, फ्लोरीकल्चर (फ्लावर गार्डन), डेरी, बीज प्रसंस्करण संयंत्र तकनीकी, कृषि यंत्रीकरण तथा सूक्ष्म सिंचाई, नर्सरी श्रमिक, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

अनुसंधान संस्थान, कानपुर (अटारी-जोन 3) में 'प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' आयोजित किया गया। वर्ष 2022-23 तक कुल 29 विभिन्न कार्य भूमिकाओं पर 241 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। इसमें अटारी, पुणे के अंतर्गत महाराष्ट्र के 26 कृषि विज्ञान केंद्रों और दो भाकृअनुप-संस्थानों (सीसीआरआई, नागपुर और डीओजीआर, राजगुरुनगर, पुणे) द्वारा 166, गुजरात के 14 केवीके और एक कृषि विश्वविद्यालय (एएयू, आनंद) द्वारा 73 और गोवा के एक केवीके और भाकृअनुप (सीसीएआरआई, गोवा) संस्थान ने 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम की भागीदारी समन्वित रूप से आयोजित की। इससे कुल 4936 किसानों और ग्रामीण युवाओं को आजीविका के लिए प्रशिक्षण दिया गया जिससे राज्य में कौशल विकास प्रशिक्षण के जरिए स्वरोजगार को बढ़ावा दिया जा सके। पिछले चार-पांच वर्षों में नर्सरी श्रमिक में 35, गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादक में 21, डेरी किसान उद्यमी में 10, मधुमक्खी पालन में 4 और पशुपालन में 29 प्रशिक्षण प्रदान किये गए हैं। किसानों को 'ग्रुप फार्मिंग प्रैक्टिशनर' जैसे कौशल में उन्मुख किया गया है। यह किसानों को बाजार से संपर्क और बाय-बैक व्यवस्था स्थापित करके उत्पादकता और आय बढ़ाने में सक्षम बनाता है। इन्हीं लाभार्थियों को पूरे भारत में नामांकित किया जा रहा है। इसमें



आंगन में मुर्गीपालन इकाई का प्रदर्शन

डेरी किसान, जैविक उत्पादक, फूलों की खेती करने वाले, मधुमक्खी पालन आदि जैसी भूमिकाएं शामिल हैं। मानव उच्च कुशल क्षमता के माध्यम से अर्थव्यवस्था में नवीन प्रतिस्पर्धा और उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है। अब भारत, दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। देश के सामने वैश्वीकरण की गति को बढ़ाना और प्रौद्योगिकी में परिवर्तन प्रदान करना दोनों चुनौतियां हैं। इसके साथ ही आर्थिकी और रोजगार सृजन के विस्तार के लिए अधिक अवसर पैदा हो रहे हैं। कृषि क्षेत्र में हुए नवीनतम विकास के मद्देनजर युवाओं के लिये कई नए आयाम उभरकर सामने आए हैं।

भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पुणे (अटारी-जोन 8) के अंतर्गत

- वर्ष 2017-18 में 12 कृषि विज्ञान केंद्रों में 200 घंटे की अवधि के 13 कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किये गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से 259 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका

कौशल प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि विज्ञान केंद्र एक प्रसिद्ध विस्तार निकाय हैं, जो भारत के लगभग प्रत्येक जिले में कार्यरत हैं। ये कृषि विज्ञान केंद्र ग्रामीण युवाओं के कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कुशल कौशल विकास भारतीय युवाओं को कृषि के क्षेत्र में आजीविका के मुख्य स्रोत के रूप में अपनाने में सक्षम बना सकती है। कृषि विज्ञान केंद्रों की स्थापना, कृषक समुदाय के लिए कृषि और संबद्ध विषयों से संबंधित व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करने के बुनियादी उद्देश्यों के साथ की गई थी। वर्तमान में देशभर में 731 कृषि विज्ञान केंद्र कार्यरत हैं। वर्तमान में भारत की जनसंख्या का 27.5 प्रतिशत युवा हैं, जो देश की सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) में लगभग 34 प्रतिशत का योगदान करते हैं।



वर्मीकम्पोस्ट उत्पादक कौशल विकास प्रशिक्षण

कृषि क्षेत्र की सीमाएं

भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि से आजीविका प्राप्त करने के बावजूद, यहां कृषि की स्थिति काफी दयनीय है। किसान खेती छोड़ रहे हैं और युवा शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। खेती धीरे-धीरे एक अलाभकारी उद्यम बन रहा है। भारतीय कृषि कम उत्पादकता, भूमि और सिंचाई के मुद्दों, शहरीकरण आदि के कारण दबाव और जनसंख्या में वृद्धि, प्राकृतिक अनियमितताओं, कीमतों में उतार-चढ़ाव, बाजार जोखिम और आर्थिक असुरक्षा से ग्रस्त है। किसानों की आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या इसी बात का प्रमाण है। देश वर्तमान में दो विपरीत स्थितियों का एक साथ सामना कर रहा है। यहां एक ओर बाजार में युवाओं के लिए रोजगार नहीं है, वहीं दूसरी ओर उद्योग जगत का कहना है कि बाजार में कुशल कर्मचारियों की भारी कमी है। भारत का रोजगार क्षेत्र एक बड़ी ढांचागत समस्या का सामना कर रहा है। इसमें बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्र के श्रमिक हैं, उनकी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है। यहां कौशल की कमी है और श्रम बाजारों पर कड़े श्रम नियमों व संस्थाओं का व्यापक प्रभाव है।

- वर्ष 2018-19 में 41 कृषि विज्ञान केंद्रों तथा 2 राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों ने 84 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके 1642 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया।
- वर्ष 2019-20 में 41 कृषि विज्ञान केंद्रों तथा एक कृषि विद्यापीठ आनंद, गुजरात और 3 राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों ने 84 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके 1758 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया है।
- वर्ष 2020-21 में 13 कृषि विज्ञान केंद्रों तथा एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान द्वारा



जैविक गुड़ का उत्पादन

19 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके 447 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

- वर्ष 2022-23 में 26 कृषि विज्ञान केंद्रों ने 36 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके 830 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया।

कौशल विकास जरूरत

आर्थिक सर्वेक्षणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में गुणवत्तापूर्ण रोजगार सृजन की गति में एक बड़ी बाधा कुल रोजगार में विनिर्माण का छोटा हिस्सा है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के विकास को बढ़ावा देना रोजगार सृजन के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसे भारत के विकास एजेंडे के प्रमुख प्रस्तावक के रूप में मान्यता दी गई है। इसलिए, एक मजबूत प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए। इससे कृषि को उद्योगों/नियोक्ताओं से जोड़ने के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण को प्लेसमेंट सुविधा से जोड़ा जाना चाहिए। गोद लिए गए गांवों में किसानों की कौशल दक्षता बढ़ाने में कृषि विज्ञान केंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कारण कृषि एवं उससे जुड़े क्षेत्रों में बहुत सुधार हुआ है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि लोगों को कौशल प्रदान करने के लिए यह भारत सरकार की एक अच्छी पहल प्रतीत हुई है। सभी जानते हैं कि भारत में जनसंख्या की कार्यशील आयु बहुत अधिक है। युवाओं में शारीरिक और मानसिक पहलुओं को बेहतर बनाने का यह सही समय है, ताकि हममें से कोई भी बेरोजगार न रहे और बेरोजगारी की समस्या कम हो जाए। केंद्र सरकार का मानना है कि कृषि को एक निजी उद्यम के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। इस दिशा में युवाओं को आकर्षित किये जाने की जरूरत है। इससे आने वाले वर्षों में भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा, ताकि यहां के युवाओं का चहुंमुखी विकास हो सके, क्योंकि एक बहुत ही उपयोगी बात यह है कि 'भारत की आत्मा गांवों में बसती है'।



कृषि विज्ञान केंद्र को जानें

महान विचारक, मोहन सिंह मेहता, की सोच का विशेष अंकुरण

मैं, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि शोध व कृषि के मध्य खड़ा हूँ

मैं, अनुसंधान संस्थान भी हूँ, मैं, खेत-खलिहान, सलाहकार भी हूँ

खेती संबंधी हर समस्या को सूँघ, उसका हल सार्वजनिक करता हूँ
मैं, चलता-फिरता-बतियाता-बुलाता, किसानों का बंधा विश्वास हूँ

ज्ञान का लबा-लब कुआँ हूँ, ज्ञान के प्यासों को खोजता-फिरता हूँ
खोजने, मिलने की आवश्यकता नहीं, मैं नारद मुनि स्वयं पहुँच जाता हूँ

कठिन, कठोर, क्लिष्ट, अव्यावहारिक अनुसंधानों को तराशा करता हूँ
आंकलन कर, आर्थिक बना, इन्हें स्थानीय हालत के अनुरूप, डालता हूँ

भूमि-पौध विकास, पौध व्याधि बचाव, डेरी, वानिकी, मूल्य-संवर्धन
संबंधी हल देना व कृषकों के दिल जीतना ही, मेरा ध्येय है

संस्थानों-प्रयोगशालों व खेत-खलिहानों के बीच खाई नापता हूँ
भर इन गहराइयों को, घटा दूरी, बिन पानी, नाव चलाता हूँ

मैं, कृषि के उचित आदानों को, उचित स्थानों तक ले जाता हूँ
हर आवश्यक आदान को उचित समय व कृषक तक पहुँचाता हूँ

हर हाल में, लाध कमर पर, तकनीकियों को बीहड़ तक ले जाता हूँ
अनवरत होती वर्षा, दलदल, सूखा, हर चुनौती बीच पहुँच जाता हूँ

बैठ किसानों बीच, मन की रूढ़िवादी, हठधर्मिता की जड़ हिलाता हूँ
द्रुत गति से नवाचार पहुँचा, समस्याओं का हल वरीयता से निकालता हूँ

खाद्यान्नों की उपलब्धता से, मिले अमन-चैन सहनशीलता को परखें
कृषि उत्पाद की निरन्तरता से, प्रजातंत्र की गहराई को भी परखें

मेरा समर्पण देखो, गांव देखो, किसान कामदार की मुस्कान देखो
मेरा परिवार फैला इतना, अनुसंधान शिक्षा केंद्र कोई फैला नहीं

मैं भारत के हर जनपद, उप-जनपद में सेवा करने पहुँच चुका हूँ
बढ़ता परिवार पारितोष है, किसानों का आशीर्वाद है, सही आकलन है

कृषि औषधालय हूँ, संकट मोचन हूँ, उन्नति की राह हूँ, मैं केवीके हूँ
भूमंडलीय ऊष्मा, बिगड़ते वातावरण का रक्षा कवच हूँ, मैं केवीके हूँ

मेरे कार्य क्षेत्र में हरियाली का राज है, दोपहर नहर संध्या का शासन है

डी. कुमार, काजरी